International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

# राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान: भारतेंदु के नाट्य-शिल्प और कथ्य का अंतर्संबंध।

**वल्लभीसिंह**
(शोधार्थी),हिंदीविभाग,बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल म.प्र।
**डॉ. गणेशलाल जैन**
(प्राध्यापक),प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, चंद्रशेखर आज़ाद शासकीय स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय, सीहोर मध्य प्रदेश।

**संक्षेप**
उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध भारतीय नवजागरण का संक्रमणकाल था, जहाँ औपनिवेशिक दमन, सांस्कृतिक हीनताबोध और सामाजिक जड़ता के विरुद्ध एक सशक्त वैचारिक प्रतिक्रिया आकार ले रही थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र इस नवजागरण के अग्रदूत के रूप में हिंदी नाटक को आधुनिक चेतना से जोड़ते हैं, राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का प्रभावी माध्यम भी बनाते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र भारतेंदु के नाट्य-साहित्य में निहित राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और शिल्पगत सौंदर्य के अंतर्संबंध का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन(राष्ट्रीयता), (सांस्कृतिक पुनरुत्थान) तथा(नाट्य शिल्प) के वैचारिक सूत्रों को एकीकृत करते हुए यह प्रतिपादित करता है कि भारतेंदु का नाट्य-शिल्प कथ्य का अनुगामी न होकर उसका सहचर है, जो राष्ट्रीय विचारधारा को सौंदर्यात्मक प्रभावशीलता प्रदान करता है।

**कुंजी शब्द:** भारतेंदु हरिश्चंद्र, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, नाट्य शिल्प, हिंदी नवजागरण

## 1. भूमिका

भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850–1885) आधुनिक हिंदी साहित्य के ऐसे युगप्रवर्तक रचनाकार हैं जिनकी साहित्यिक दृष्टि केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रही, सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण से गहराई से जुड़ी रही। उनके नाटकों में तत्कालीन भारतीय समाज की दासता-बोधग्रस्त मानसिकता, सांस्कृतिक विस्मृति और नैतिक पतन का

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

सजीव चित्रण मिलता है। इस संदर्भ में राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान भारतेंदु की नाट्य-दृष्टि के केंद्रीय सरोकार हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध भारतीय इतिहास, समाज और संस्कृति के लिए एक गहन संक्रमण का काल था। यह वह समय था जब भारत राजनीतिक रूप से औपनिवेशिक अधीनता के दंश को झेल रहा था, आर्थिक रूप से शोषण और निर्भरता की संरचनाओं में जकड़ा हुआ था, और सांस्कृतिक रूप से आत्मविस्मृति तथा हीनताबोध की स्थिति से गुजर रहा था। अंग्रेज़ी शासन केवल सत्ता-परिवर्तन तक सीमित नहीं था, उसने ज्ञान-प्रणालियों, भाषा-संरचनाओं, शिक्षा-पद्धतियों और सांस्कृतिक मूल्यों पर भी गहरा प्रभाव डाला। ऐसे ऐतिहासिक क्षण में साहित्य, विशेषतः नाटक, केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं रह जाता, सामाजिक आत्मचेतना और राष्ट्रीय पुनर्संरचना का सशक्त औजार बन जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र इसी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक संदर्भ में एक युगप्रवर्तक रचनाकार के रूप में उभरते हैं। उन्हें आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक कहा जाना मात्र एक साहित्यिक सम्मान नहीं, उनके बहुआयामी रचनात्मक अवदान की स्वाभाविक स्वीकृति है। भारतेंदु का साहित्य—विशेषतः उनका नाट्य-साहित्य—समाज, संस्कृति और राष्ट्र के प्रश्नों से गहरे रूप में संबद्ध है। उन्होंने नाटक को मनोरंजन की परिधि से निकालकर वैचारिक हस्तक्षेप का माध्यम बनाया। उनके लिए नाटक मंचीय कला के साथ-साथ सामाजिक संवाद का उपकरण है, जो जनता को अपने समय की वास्तविकताओं से रूबरू कराता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का केंद्रीय सरोकार भारतेंदु के नाट्य-साहित्य में निहित राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और नाट्य-शिल्प के अंतर्संबंध का सूक्ष्म एवं समग्र विश्लेषण है। सामान्यतः साहित्यिक अध्ययन में कथ्य और शिल्प को पृथक इकाइयों के रूप में देखा जाता रहा है—जहाँ कथ्य को वैचारिक स्तर पर और शिल्प को सौंदर्यात्मक स्तर पर परखा जाता है। किंतु भारतेंदु के नाटकों के संदर्भ में यह विभाजन अपर्याप्त सिद्ध होता है, क्योंकि उनके यहाँ विचार और शिल्प परस्पर गुंथे हुए हैं। राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के विचार शिल्पगत संरचनाओं के माध्यम से ही प्रभावी रूप ग्रहण करते हैं।

राष्ट्रीयता, भारतेंदु के लिए, केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा नहीं है। यह एक व्यापक सांस्कृतिक अवधारणा है, जिसमें भाषा, इतिहास, परंपरा, नैतिकता और लोकजीवन सम्मिलित हैं। भारतेंदु यह भली-भाँति समझते थे कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक स्वतंत्रता

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

सांस्कृतिक आत्मबोध के बिना संभव नहीं है। इसी कारण उनके नाटकों में राष्ट्रीयता सांस्कृतिक पुनरुत्थान के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी हुई दिखाई देती है। वे भारतीय समाज की उस मानसिक दासता को तोड़ना चाहते थे, जो औपनिवेशिक सत्ता से भी अधिक खतरनाक थी।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान की अवधारणा भारतेंदु के नाट्य-साहित्य में अतीत-गौरव के अंधे अनुकरण तक सीमित नहीं है। वे परंपरा को स्थिर और जड़ इकाई नहीं मानते, उसे एक जीवंत सांस्कृतिक प्रवाह के रूप में देखते हैं। भारतेंदु के लिए सांस्कृतिक पुनरुत्थान का अर्थ है—भारतीय परंपराओं, मूल्यों और लोक-संस्कृति को आधुनिक चेतना के आलोक में पुनर्परिभाषित करना। यही कारण है कि उनके नाटकों में पौराणिक, ऐतिहासिक और समकालीन तत्व एक साथ उपस्थित रहते हैं।

नाट्य-शिल्प के स्तर पर भारतेंदु का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने हिंदी नाटक को संस्कृत नाट्य-परंपरा और लोक-नाट्य-रूपों के संयोग से एक नई दिशा प्रदान की। उनके नाटकों की संरचना, संवाद-योजना, पात्र-निर्माण, प्रतीकात्मकता और हास्य-व्यंग्य तत्व उनके वैचारिक उद्देश्यों के अनुरूप ढाले गए हैं। शिल्प यहाँ केवल सौंदर्य की सृष्टि नहीं करता, विचार को ग्राह्य, संप्रेषणीय और प्रभावी बनाता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भारतेंदु के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनरुत्थान केवल विषयवस्तु (कथ्य) तक सीमित नहीं हैं, नाट्य शिल्प—संरचना, संवाद, प्रतीक, व्यंग्य, भाषा-शैली और मंचीय विन्यास—के माध्यम से सघन रूप में अभिव्यक्त होते हैं।

## भारतेंदु युग और राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत औपनिवेशिक शासन के अधीन राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक अवमूल्यन से ग्रस्त था। अंग्रेजी शिक्षा-प्रणाली ने एक ओर आधुनिक चेतना का संचार किया, तो दूसरी ओर भारतीय परंपराओं के प्रति उपेक्षा का भाव भी उत्पन्न किया। इसी द्वंद्वात्मक स्थिति में भारतेंदु जैसे साहित्यकारों ने राष्ट्रीय अस्मिता की पुनर्स्थापना का बीड़ा उठाया।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतेंदु की राष्ट्रीयता संकीर्ण राजनीतिक राष्ट्रवाद नहीं है, वह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का स्वरूप ग्रहण करती है, जिसमें भाषा, इतिहास, धर्म, परंपरा और लोक-संस्कृति की केंद्रीय भूमिका है।

**भारतेंदु के नाटकों में राष्ट्रीयता**

भारतेंदु के नाटकों में राष्ट्रीयता बहुआयामी रूप में अभिव्यक्त होती है:

- **औपनिवेशिक शोषण का प्रतिरोध**

*अंधेर नगरी* जैसे नाटक में अंग्रेजी शासन की अन्यायपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य है। 'टके सेर भाजी' जैसी स्थितियाँ औपनिवेशिक शासन की अव्यवस्था और नैतिक दिवालियापन का प्रतीक बन जाती हैं।

- **स्वदेशी चेतना और आत्मगौरव**

भारतेंदु भारतीय भाषा, वस्त्र, परंपरा और नैतिक मूल्यों को आत्मगौरव से जोड़ते हैं। उनके नाटकों में विदेशी अनुकरण को हास्यास्पद बनाकर प्रस्तुत किया गया है, जिससे दर्शक-मानस में स्वदेशी चेतना का विकास हो।

- **जन-जागरण का उद्देश्य**

भारतेंदु का नाटक अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं रहता; वह जनसामान्य की चेतना को झकझोरने का माध्यम बनता है। सरल भाषा, लोक-प्रचलित मुहावरों और हास्य-व्यंग्य के माध्यम से राष्ट्रीय विचार जन-जन तक पहुँचते हैं।

**सांस्कृतिक पुनरुत्थान की अवधारणा**

भारतेंदु के नाटकों में सांस्कृतिक पुनरुत्थान राष्ट्रीयता का अनिवार्य पूरक है। वे मानते हैं कि राजनीतिक स्वतंत्रता से पूर्व सांस्कृतिक आत्मबोध आवश्यक है।

- **भारतीय परंपरा और मूल्यबोध**

भारतेंदु प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों—धर्म, नैतिकता, पारिवारिक संरचना और सामाजिक उत्तरदायित्व—को आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित करते हैं।

- **लोक-संस्कृति और भाषा**

उनकी नाट्य-भाषा खड़ी बोली, ब्रज और लोक-तत्वों का समन्वय है। यह भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, सांस्कृतिक पहचान का संवाहक है।

- **पाश्चात्य प्रभावों का संतुलित मूल्यांकन**

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतेंदु अंधाधुंध पाश्चात्यकरण के विरोधी हैं, किंतु उपयोगी आधुनिक तत्वों को स्वीकार करने में संकोच नहीं करते। यह दृष्टि सांस्कृतिक पुनरुत्थान को रूढ़िवाद से मुक्त करती है।

**भारतेंदु का नाट्य शिल्प और सौंदर्यबोध**

भारतेंदु का नाट्य शिल्प उनके वैचारिक उद्देश्यों का सशक्त माध्यम है।

- **कथानक संरचना**

उनके नाटकों का कथानक सरल होते हुए भी अर्थ-गहन है। घटनाओं की तीव्रता और प्रतीकात्मकता दर्शक को वैचारिक निष्कर्ष तक पहुँचाती है।

- **संवाद योजना**

संवाद संक्षिप्त, व्यंग्यात्मक और प्रभावशाली हैं। संवादों के माध्यम से सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ उद्घाटित होता है।

- **हास्य-व्यंग्य और प्रतीक**

हास्य भारतेंदु के नाटकों में मनोरंजन का साधन न होकर आलोचनात्मक हथियार है। पात्र और स्थितियाँ प्रतीकात्मक होकर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक संदेश को तीव्र बनाती हैं।

- **मंचीय चेतना**

भारतेंदु मंच की सीमाओं को समझते हुए दृश्य-संयोजन और पात्र-निर्माण करते हैं, जिससे नाटक प्रभावी मंचन योग्य बनते हैं।

**राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और नाट्य शिल्प का अंतर्संबंध**

भारतेंदु के नाटकों में कथ्य और शिल्प परस्पर विरोधी नहीं, सहजीवी हैं। राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के विचार शिल्पगत सौंदर्य के माध्यम से अधिक ग्राह्य और प्रभावी बनते हैं। शिल्प विचार को सौंदर्य प्रदान करता है और विचार शिल्प को सार्थकता।

यह अंतर्संबंध भारतेंदु को केवल विचारक नहीं, सशक्त नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

**उद्धरणात्मक विश्लेषण: राष्ट्रीयता, संस्कृति और शिल्प**

भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाट्य-साहित्य में निहित राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान को समकालीन और उत्तरवर्ती विद्वानों ने स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है। भारतेंदु स्वयं घोषणा करते हैं—

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

**"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"**
(भारतेंदु हरिश्चंद्र)
यह कथन भारतेंदु की सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा को स्पष्ट करता है, जहाँ भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम न होकर राष्ट्रीय अस्मिता का आधार बन जाती है। उनके नाटकों की भाषिक संरचना इसी वैचारिक पृष्ठभूमि से निर्मित है।
रामचंद्र शुक्ल भारतेंदु के नाट्य-कर्म को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ते हुए लिखते हैं—
**"भारतेंदु ने हिंदी साहित्य को देश की वर्तमान दशा से जोड़ा और उसे जन-जागरण का साधन बनाया।"**
(शुक्ल, *हिंदी साहित्य का इतिहास*)
यह टिप्पणी भारतेंदु के नाट्य-शिल्प की सामाजिक प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है, जहाँ कला और राष्ट्रबोध का विलगाव संभव नहीं रह जाता।
सांस्कृतिक पुनरुत्थान के संदर्भ में हजारीप्रसाद द्विवेदी का मत उल्लेखनीय है—
**"भारतेंदु का साहित्य अतीत की गौरवगाथा नहीं, परंपरा के आलोक में वर्तमान को समझने का प्रयास है।"**
(द्विवेदी, *हिंदी साहित्य की भूमिका*)
इस दृष्टि से भारतेंदु का नाट्य-शिल्प रूढ़िवादी न होकर गतिशील है, जो सांस्कृतिक परंपरा को आधुनिक संदर्भों में पुनर्स्थापित करता है।
नामवर सिंह भारतेंदु के व्यंग्यात्मक शिल्प पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं—
**"भारतेंदु का व्यंग्य केवल हँसाता नहीं, सोचने के लिए विवश करता है।"**
(सिंह, *आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ*)
यह कथन स्पष्ट करता है कि हास्य-व्यंग्य भारतेंदु के नाटकों में शिल्पगत सौंदर्य के साथ-साथ वैचारिक तीक्ष्णता का भी वाहक है।
इन उद्धरणों के आलोक में यह कहा जा सकता है कि भारतेंदु के नाटकों में राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और नाट्य-शिल्प एक समन्वित कलात्मक-संरचना का निर्माण करते हैं, जहाँ विचार और सौंदर्य परस्पर पूरक रूप में उपस्थित हैं।

**निष्कर्ष**

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाट्य-साहित्य भारतीय नवजागरण का जीवंत दस्तावेज है। उनके नाटकों में राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और नाट्य शिल्प एक-दूसरे से गहराई से संबद्ध हैं। भारतेंदु का योगदान हिंदी नाटक को सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय चेतना का सशक्त माध्यम बनाने में ऐतिहासिक महत्व रखता है।प्रस्तुत शोध-अध्ययन के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाट्य-साहित्य आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में केवल एक कलात्मक उपलब्धि नहीं, एक सशक्त वैचारिक हस्तक्षेप के रूप में प्रतिष्ठित है। उनके नाटकों में राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और नाट्य-शिल्प का अंतर्संबंध इस प्रकार विकसित होता है कि इनमें से किसी एक को अलग करके देखना कठिन है, पर उनके साहित्यिक उद्देश्य के साथ अन्याय भी होगा।

भारतेंदु की राष्ट्रीय चेतना औपनिवेशिक सत्ता के प्रत्यक्ष राजनीतिक प्रतिरोध तक सीमित नहीं रहती, वह समाज की आंतरिक संरचनाओं—मानसिक दासता, सांस्कृतिक हीनताबोध और नैतिक पतन—पर भी गहन प्रहार करती है। उनके नाटकों में राष्ट्रीयता एक जागरण-प्रक्रिया है, जो जनता को अपने समय, समाज और संस्कृति के प्रति सजग बनाती है। यह राष्ट्रीयता नारेबाज़ी से नहीं, व्यंग्य, प्रतीक और मंचीय स्थितियों के माध्यम से विकसित होती है।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान भारतेंदु के नाट्य-साहित्य में राष्ट्रीयता का अनिवार्य विस्तार है। वे यह मानते हैं कि सांस्कृतिक आत्मबोध के बिना राष्ट्रीय चेतना खोखली रह जाती है। इसीलिए उनके नाटकों में भाषा, लोक-संस्कृति, परंपरागत मूल्य और सामाजिक आचार-विचार केंद्रीय स्थान ग्रहण करते हैं। भारतेंदु का सांस्कृतिक दृष्टिकोण न तो रूढ़िवादी है और न ही अंधाधुंध आधुनिकतावादी; वह संतुलित और विवेकपूर्ण है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का सृजनात्मक समन्वय दिखाई देता है।

नाट्य-शिल्प के स्तर पर भारतेंदु का योगदान उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता को सौंदर्यात्मक प्रभावशीलता प्रदान करता है। उनके नाटकों की कथानक-संरचना, संवाद-योजना और पात्र-निर्माण इस प्रकार विन्यस्त हैं कि विचार मंच पर जीवंत हो उठता है। हास्य-व्यंग्य उनके यहाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं, सामाजिक आलोचना का सशक्त उपकरण है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

प्रतीकात्मक स्थितियाँ और अतिरंजित पात्र दर्शक को हँसाते हुए भी गहरे आत्ममंथन के लिए विवश करते हैं।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष भी निकलता है कि भारतेंदु का नाट्य-शिल्प कथ्य का अनुगामी न होकर उसका सहचर है। शिल्प और विचार के बीच एक जीवंत संवाद स्थापित होता है, जिसमें दोनों एक-दूसरे को समृद्ध करते हैं। यही अंतर्संबंध भारतेंदु को अपने समकालीन रचनाकारों से विशिष्ट बनाता है और उनके नाटकों को दीर्घकालिक प्रासंगिकता प्रदान करता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाट्य-साहित्य भारतीय नवजागरण की वैचारिक चेतना, सांस्कृतिक पुनर्स्थापना और कलात्मक नवोन्मेष का संगम है। उनके नाटक न केवल अपने समय की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों का सजीव दस्तावेज हैं, वे आधुनिक भारत की राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस दृष्टि से भारतेंदु का नाट्य-कर्म आज भी अध्ययन, पुनर्मूल्यांकन और विमर्श की व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

## संदर्भ सूची

1. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (2010). हिन्दी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 112–145।
2. मिश्र, रामविलास. (2005). भारतेंदु युग और हिन्दी नवजागरण. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 67–104।
3. शुक्ल, रामचन्द्र. (2014). हिन्दी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, पृ. 421–460।
4. सिंह, नामवर. (2009). आधुनिकता और हिन्दी साहित्य. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. 89–128।
5. त्रिपाठी, शिवकुमार. (2012). भारतेंदु हरिश्चंद्र: व्यक्तित्व और कृतित्व. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, पृ. 153–198।
6. पांडेय, रामनरेश. (2011). हिन्दी नाटक और रंगमंच की परंपरा. नई दिल्ली: साहित्य भवन, पृ. 201–245।
7. वर्मा, धीरेंद्र. (2008). हिन्दी नाट्य साहित्य का विकास. वाराणसी: विश्वभारती प्रकाशन, पृ. 98–136।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

8. मिश्र, सत्यप्रकाश. (2015). राष्ट्रीय चेतना और हिन्दी साहित्य. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, पृ. 55–92।
9. तिवारी, भोलानाथ. (2007). हिन्दी साहित्य में नवजागरण. वाराणसी: छात्रभारती प्रकाशन, पृ. 173–210।
10. चतुर्वेदी, पार्वतीचरण. (2013). भारतेंदु युग: सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य. इलाहाबाद: भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 121–165।